Her Story

She's growing up in her husband's house.
With her two sons and a daughter,
The sixteen year old woman is growing up -
In her husband's house.

She wakes up at 4 with the rooster's crow:
She's fresh and ready for work at once;
The sixteen year old woman!
The Canning local of 4:40 comes to Taaldi at 4:52
The station is a 2 miles walk :
It's still a midnight to her husband and children ;
It's her daily routine to board the train,
And sit by the door.
Ratan da will get up at Betberia,
With puffed rice and cooked chickpeas ;
She quickly takes out one rupee and fifty paisa,
She is on the puffed rice and cooked chickpeas,
And raw chilli between the fingers -
While the train crosses Betberia;
Champahati-Kalikapur-Bidyadharpur-Sonarpur-Narendrapur...
It's still seven stations to Jadavpur.
The Jadavpur train of 6:10 is running twenty minutes late today ,
Then run run run...the first house is at Bijoygarh -
Jharna madam will be very angry today :
Every house work is delayed if the first one is late.
Sir will leave for office at eight after having the breakfast,
Madam needs the bed tea sharp at 7.
It takes from 8:30 to 11 to finish cooking,
Doing the dishes, cleaning the floor, dusting,
At the Golfgreen's mess of Debu da.
But the mess boys are really good -
The lunch is done here while returning;
If it can be managed to reach Bikramgarh by 12,
The job of washing the clothes at Bikramgarh pond is really nice -
Five rupees for one bucket of clothes,
Five to seven buckets are done in a couple of hours.

This daily washing is just to collect the money
For her husband's addictives-
Otherwise awaits her a round of physical abuse.
It takes 3pm to return
After eating rice, lentils and veggies at Debu Da's house,
Washing the dishes and utensils,
Washing the same for Jharna ma'am,
And then work at Kolkata ends with cleaning her floor;
Again run run run,
Canning local is at 5:20.
Jharna ma'am gives 700 rupees a month,
Debu da gives 800,
And 25-30 rupees a day for washing clothes.
The sixteen year old woman gets to relax
After reaching home and preparing the oven for cooking.
"The children have slept off without having the meal?
Maybe it has already crossed 9pm.
There, I can hear the bell of Fatik Da's cycle ringing -
He comes by train at 8:40pm.
He is again abusing being drunk -
What if he pukes today as well!
It took till 12 last night to clean his puke.
I'll go and sleep off-
It's a new day tomorrow."

Sometimes he gets sick,
Sometimes the children or the sixteen years old woman gets sick.
They get sick, she takes a day off.
Sometimes there's no cooking due to lack of money,
No money for his addictives, she gets beaten up,
Jharna ma'am threatens her to terminate.
The sixteen year old woman in her husband's house
Still lights a candle on her off day,
And scratches A-B-C-D on the black slate.
That sixteen year old woman is growing up -
Along with her children.

একটি মেয়ের গল্প

মেয়েটা বড় হচ্ছে স্বামীর সংসারে
দুই ছেলে এক মেয়েকে কোলে পিঠে নিয়ে
বড় হচ্ছে বছর ষোলোর মেয়েটা
স্বামীর সংসারে!

ভোর চারটেতে মুরগীর ডাকে রোজ ঘুম ভাঙে
এক ছুটে হাতমুখ ধুয়ে মেয়েটা তৈরী
বছর ষোলোর মেয়েটা!
চারটে চল্লিশের ক্যানিং লোকাল চারটে বাহান্নতে তালদি আসে
প্রায় দুমাইল হেঁটে তবে স্টেশন
ঘরে স্বামী আর ছেলেমেয়েদের তখনও মাঝরাত।
ট্রেনে উঠেই দরজার পাশে হেলান দিয়ে
মাটিতে বসে পড়া ওর রোজের অভ্যাস,
বেতবেরিয়া থেকে রতনদার ঘুগনি মুড়ি উঠবে
আঁচলের খুঁট থেকে একটাকা পঞ্চাশ বের করে ফেলে তড়িঘড়ি
বেতবেরিয়া পেরোতেই ঘুগনি, মুড়ি আর
আঙুলের ফাঁকে কাঁচালঙ্কা
চম্পাহাটি-কালিকাপুর-বিদ্যাধরপুর-সোনারপুর-নরেন্দ্রপুর...
যাদবপুর এখনও সাতটা ইন্টিশান
ছটা দশ মিনিটের যাদবপুরের ট্রেন আজ মিনিট কুড়ি লেট
এরপর দৌড় দৌড় দৌড়...বিজয়গড়ে কাজের বাড়ী।
আজ ঝরনাবৌদি খুব রেগে যাবে,
প্রথম বাড়ী রান্নার দেরি হলে সব বাড়ী লেট।
দাদাবাবু অফিস যাবে খেয়ে আটটার মধ্যে
বৌদির সাতটায় বিছানায় চা চাই-ই চাই।
সাড়ে আটটায় গল্‌ফগ্রীনের
দেবুদাদের মেসের রান্না করে
থালাবাসন মেজে, ঘর মুছে, ঝাঁট দিয়ে
বেলা এগারোটা বেজে যায়।
তবে মেসের ছেলেগুলো ভালো
দুপুরের খাবারটা ফেরার পথে এখানেই হয়ে যায়।
বেলা বারোটা নাগাদ বিক্রমগড় যেতে পারলে

বিক্রমগড়ের পুকুরে কাপড়কাচার কাজটা দারুন!
একবালতি কাপড় কাচলে পাঁচ টাকা
দু ঘণ্টায় পাঁচ-সাত বালতি কাপড় হয়ে যায়।
স্বামীর নেশার পয়সা জোগাড়
করার জন্যই ওর রোজ কাপড়কাচা
নয়তো কপালে জোটে দু-চার ঘা।
বেলা তিনটে বাজলে তবে ফেরার পথে
দেবুদাদের বাড়ীতে ভাত, ডাল, তরকারি খেয়ে
চারটে ছেলের থালা, বাসন মেজে ধুয়ে
তারপর করনাবৌদির বাড়ী থালা বাসন মেজে
ঘর মুছে তবে কোলকাতার কাজ শেষ।

আবার দৌড় দৌড় দৌড়
ক্যানিং লোকাল পাঁচটা কুড়ি মিনিটে,
ঝরনাবৌদির বাড়ী মাসে সাতশো টাকা
দেবুদাদের মেসে মাসে আটশো টাকা
আর দিনে পঁচিশ তিরিশ টাকার কাপড় কাচা
বাড়ী পৌঁছে উনুনে আঁচ দিয়ে
তবে একটু জিরোতে পারে বছর ষোলোর মেয়েটা।
ছেলেমেয়ে দুটো না খেয়েই ঘুমিয়ে পড়েছে দাওয়ায়?
রাত নটা বেজে গেলো মনে হচ্ছে
ঐ যে ফটিকদার সাইকেলের আওয়াজ পেলাম
ওতো আটটা চল্লিশের ট্রেনে আসে।
মরদটা আবার উদোম গাল পাড়ছে নেশার ঘোরে
আজ আবার বমি না করে
কালতো বমি কাচাতে কাচাতে রাত বারোটা বেজে গেলো।
যাই শুয়ে পড়ি
কাল আবার নতুন দিন!

এর মধ্যে কখনো অসুখ করে মরদের
অসুখ করে ছেলেমেয়েদের অথবা ষোলো বছরের মেয়েটার
অসুখ করে, কামাই হয়, পয়সা নেই বলে রান্না হয় না,
মরদের নেশার পয়সা নেই, মার জোটে কপালে,

ঝরনা বৌদি ফোনে শাসায় কাজ ছাড়িয়ে দেবে বলে,
ষোলো বছরের মেয়েটা সংসারে--
স্বামীর সংসারে তবুও ওই কামাই-এর দিনে লম্ফ জ্বালিয়ে
অ-আ-ই-ঈ লেখে কালো সেলেটের উপর।
ছেলে মেয়েদের নিয়ে, কোলেপিঠে নিয়ে
বড় হচ্ছে যে ষোলো বছরের মেয়েটা!

নভেম্বর ২০০৮

एक लड़की की कहानी

वह लड़की जो पति के घर में पल बढ़ रही है

दो बेटे और एक बेटी को लेकर पल बढ़ रही है

सोलह साल की वह लड़की,पति के घर में।

हर रोज़ सुबह चार बजे

मुर्गी की आवाज़ से नींद खुलती है

जल्द से हाथ मुँह धोकर हो जाती है तैयार,वह सोलह साल की लड़की।

४.४० की ट्रैन है -कैनिंग लोकल ;

४.५२ में आती है।

लगभग दो मील दूर है स्टेशन

तब भी आधी रात है पति और बच्चों के लिए।

ट्रैन में चढ़ते ही दरवाज़े पर सर रखकर फर्श पर बैठने की रोज़ की आदत है ,

बेतबेड़िया से रतन दा घुघनी और मुर्रा लेकर चढ़ेंगे,

आँचल की गाँठ से एक रूपया और पचास पैसे निकाल कर रखती है।

बेतबेड़िया पार करते ही मटर मुर्रा और उँगलियों में हरी मिर्च।

चंपाहाटी,कालिकापुर,विद्याधरपुर,सोनारपुर,नरेन्द्रपुर,जादवपुर,अभी भी सात स्टेशन बाकी है।

६.१० वाली जादवपुर की गाडी आज २० मिनट लेट है,

इसके बाद भाग-दौड़ ,विजयगढ़ में एक घर में काम करने जाएगी।

आज झरना भाभी बहुत गुस्सा करेंगी,

पहले घर में खाना पकाने में देर हो जाए

तो सब घरों में देर हो जाएगी

साहब आठ बजे नाश्ता कर ऑफिस जाएंगे

भाभी को सात बजे बिस्तर में चाय चाहिए ही

साढ़े सात बजे गॉल्फ़ग्रीन में देबुदा के मेस में खाना पकाती है।

बर्तन धोते -धोते,पोछा लगाते-लगाते, झाड़ू लगाते-लगाते ग्यारह बज जाता हैं।

पर मेस के लड़के फिर भी अच्छे हैं ,

दोपहर का खाना भी वही खा लेती है,

बारह बजे विक्रमगढ़ जा सके इसलिए,

विक्रमगढ़ के तालाब में कपड़े धोने का मजा ही अलग है,

एक बाल्टी कपड़े धोने पर पांच रूपए मिलते हैं,

दो घंटे में पांच से सात बाल्टी कपड़े धो देती है ,

पति नशा करता है,उसी के पैसे जुगाड़ने के लिए बेचारी रोज कपडे धोती है,

वरना नसीब में मिलती है मार।

दोपहर के तीन बजे लौटते वक्त,

देबुदा के घर में चावल- दाल- सब्जी खाकर चार लड़कों के बर्तन धो कर,

उसके कोलकाता के काम ख़त्म होते हैं।

फिर भाग -दौड़ पांच बीस वाली कैनिंग लोकल से,

झरना भाभी के घर से महीने में सात सौ,

देबुदा के घर से आठ सौ।

दिन के कपड़े धोकर मिलते हैं पचीस -तीस रूपए,

घर पहुँचकर थोड़ा काम कर आराम करती है,

वह सोलह साल की लड़की।

बेटा बेटी बिना खाए ही सो गए हैं द्वार पर,

लग रहा है रात के ९ बज गए हैं।

अरे फटिक भैया के साइकिल की आवाज़,

वह तो आठ चालीस की ट्रैन में आता है।

मेरा मरद आज फिर से नशे में चूर होकर गाली बक रहा है।

आज फिर से उल्टी न कर बैठे,

कल तो उल्टी साफ़ करते करते ही रात के बारह बज गए थे।

चलो,सो जाते हैं।

कल फिर से नए दिन की शुरुआत करनी है।

इसी बीच में कभी मरद बीमार पड़ता है ,तो बीमार पड़ते है कभी बच्चें ,

या वह सोलह साल की लड़की बीमार पड़ती है,

काम में जाना नहीं होता।

नहीं आते हैं पैसे।

चूल्हा नहीं जलता,

मरद को नशे के पैसे नहीं मिलते हैं ,

लड़की को पड़ती है मार।

झरना भाभी फ़ोन में काम से निकाल देने की धमकी देती है।

वह सोलह साल की लड़की पति के घर में,

अपनी छुट्टी के दिनों में,

लालटेन जला कर अ -आ -इ -ई लिखती है स्लेट पर,

बेटे बेटियों के साथ,

खुद भी पल बढ़ रही है वह सोलह साल की लड़की।